BA(Hons.) PART –I , Paper- I

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति की विशेषताएँ

(Characteristics of the Nature of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति की विशेषताएँ निम्न प्रकार है :–

1. **सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक होती है (The Nature of Social Change is Social)** – सामाजिक परिवर्तन प्रत्येक समाज के लिए आवश्यक है। सामाजिक परिवर्तन के लिए समाज के सम्पूर्ण समुदाय, संरचना, मानवीय व्यवहारों एवं कार्यविधियों में परिवर्तन आवश्यक है और यह तभी संभव है जब सामाजिक स्तर पर समाज की प्रकृति में बदलाव हो। समाज के किसी एक व्यक्ति, संस्था, जाति व प्रजाति में बदलाव हो जाने से, समाज में परिवर्तन नहीं हो सकता है अर्थात् इसे सामाजिक परिवर्तन नहीं कहा जा सकता है। यह तो व्यक्तिवादी परिवर्तन का स्वरूप है। क्योंकि सामाजिक परिवर्तन का संबंध सम्पूर्ण समुदाय एवं समाज में होने वाले परिवर्तन से है।
2. **सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है (Social Change is a Universal Process)** – प्रत्येक समाज के लिए परिवर्तन आवश्यक है। परिवर्तन किसी भी समाज में चलने वाली एक प्रक्रिया है जो किसी न किसी रूप में निरन्तर चलती रहती है। समाज में परिवर्तन की गति बढ़ती अथवा घटती रहती है। जिसके आधार पर सामाजिक विकास का आकलन किया जा सकता है। प्रत्येक समाज के परिवर्तन की प्रकृति एवं स्वरूप अलग–अलग होते हैं। कोई भी ऐसा समाज नहीं है जिममें कुछ भी परिवर्तन न हुआ हो, क्योंकि सामाजिक परिवर्तन सर्वव्यापी है।
3. **सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रघटना है (Social Change is a Complex Phenomenon)** – किसी भी समाज के परिवर्तन का आकलन माप–तौल कर करना संभव नहीं है क्योंकि सामाजिक परिवर्तन का संबंध गुणात्मक परिवर्तन से है। अर्थात् किसी भी समाज के परिवर्तन का आकलन उसके सामाजिक मूल्यों, सामाजिक व्यवहारों, सामाजिक रीति रिवाजों, भौतिक संस्कृति, सामाजिक विचारों, सामाजिक

क्रियाकलापों, सामाजिक संस्थाओं इत्यादि के आधार पर किया जा सकता है। इन सब का आकलन करने के लिए काफी धैय एवं विवेक की आवश्यकता है।

4. **सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता (Essentiality of Social Change)** – परिवर्तन प्रकृति का नियम है और सामाजिक परिवर्तन उसी के द्वारा नियंत्रित एवं निर्देशित होता है। सामाजिक परिवर्तन प्रत्येक समाज में अनिवार्य रूप से होता है। मानव स्वभावतः समाज में परिवर्तन की इच्छा रखते हैं इसलिए मानव की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। किसी भी समाज का विकास तभी संभव है जब समाज में स्थापित संरचना में परिवर्तन किया जाय। प्रत्येक समाज गत्यात्मक एवं परिवर्तनशील होने के कारण, सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता को स्वीकार करता है।
5. **सामाजिक परिवर्तन का भविष्यवाणी करना संभव नहीं (Prediction of Social Change is not possible)** – किसी भी समाज में किस समय क्या परिवर्तन हो जायेगा यह कहना संभव नहीं है जिसके कारण किसी भी समाज के सामाजिक परिवर्तन का भविष्यवाणी करना संभव नहीं है। किसी भी समाज के सामाजिक परिवर्तन का कोई अन्तर्निहित नियम नहीं होता है। कई बार अनेक अकास्मिक कारक समाज में अचानक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं।
6. **सामाजिक परिवर्तन की असमान एवं तुलनात्मक गति (Unequal and Comparative speed of Social Change)** – सामााजिक परिवर्तन की गति असमान एवं तुलनात्मक होती है। प्रत्येक समाज का परिवर्तन भिन्न–भिन्न समयों में असमान गति से होता है। किसी भी समाज का परिवर्तन उस समाज में रहने वाले लोगों के विभिन्न पहलूओं एवं उस समाज के भौतिक संरचना पर निर्भर करता है, वही दूसरी तरफ समाज की एक इकाई दूसरे इकाई को भी परिवर्तित करती है। परिवर्तन के एक ही कारक का विभिन्न समाज में अलग–अलग प्रभाव पड़ता है। किसी भी समाज के सामाजिक परिवर्तन के गति का आकलन दो विभिन्न समाजों के परिवर्तन के तुलना के आधार पर ही कर सकते हैं। इस प्रकार हमलोग सामाजिक परिवर्तन का केवल तुलनात्मक अध्ययन ही कर सकते हैं।

बिलवर्ट इ. मूर ने आधुनिक समय को ध्यान में रखते हुए सामाजिक परिवर्तन की विशेषताओं को अपने तरीके से प्रस्तुत किया है, जो निम्न प्रकार है–

1. सामाजिक परिवर्तन निश्चित रूप से घटित होते रहते हैं। समाज के विकास के समय में परिवर्तन की गति काफी तीव्र हो जाती है।
2. हमारे विचारों एवं सामाजिक संरचना पर परिवर्तन का काफी प्रभाव पड़ता है।
3. सामाजिक परिवर्तन का हमलोग केवल अनुमान लगा सकते हैं उसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं।

4. परिवर्तन का विस्तार सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में देख सकते हैं। सामाजिक विचारों, भौतिक वस्तुओं के क्षेत्र में एवं संस्थाओं की तुलना में, परिवर्तन काफी तीव्र गति से होता है।
5. आधुनिक काल में परिवर्तन की गति काफी तीव्र होने के कारण इसका अवलोकन हम आसानी से कर सकते हैं।
6. सामाजिक परिवर्तन गुणात्मक होता है अर्थात् सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत एक समाज दूसरे समाज को परिवर्तित करता है। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक पूरा समाज एक–दूसरे के कार्यकलापों से भली भॉति परिचित नहीं हो जाता है।
7. आधुनिक समाज में सामााजिक परिवर्तन मनमाने ढ़ग से नहीं किया जा सकता है। आधुनिक समाज में लोगों को पूर्ण स्वतंत्र और असंगठित भी नहीं छोड़ा जा सकता है। प्रत्येक समाज को सामाजिक प्रक्रिया के तहत उसे नियंत्रित रखकर वांछित लक्ष्यों की दिशा में क्रियाशील बनाया जा सकता है।